ISSN: 0973-0583

पुस्तक समीक्षा

बहुरूपिये चरित्रों पर प्रहार करता "लक्खू दा की बताशा संस्कृति

राधवेन्द्र कुमार

सहायक प्राध्यापक, रधुनन्दन टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, मठियापुर, पटना

व्यंग्य साहित्य की सर्जना करना एक साहित्यकार के लिए कठिन कार्य माना जाता है। अमूमन साहित्यकार व्यंग्य साहित्य की सर्जना नहीं कर पाते। व्यंग्य साहित्य की सर्जना के लिए वक्र और तीक्ष्ण दृष्टि रखनी होती है। हिन्दी साहित्य में जिस व्यंग्य विधा को कठिन विधा माना जाता है, श्रीकान्त व्यास ने उस कठिन कार्य को बखूबी साधा है। हिन्दी सहित्य के देदीप्यमान नक्षत्र श्रीकान्त व्यास को गद्य व पद्य विधा के लेखन में महारत हासिल है। इनकी अलग भाषा-शैली है। व्यंग्य लेखन में इनकी चरम साधना है। अब तक इन्होंने करीब तीन दर्जन मौलिक ग्रंथों की रचना की है। इनकी तमाम पुस्तकों ने पाठकों के बीच खासी लोकप्रियता हासिल की है।

प्रख्यात साहित्यकार श्रीकान्त व्यास द्वारा लिखित हिन्दी व्यंग्य कथा-संग्रह "लक्खू दा की बताशा संस्कृति" एक महत्वपूर्ण पुस्तक है। व्यंग्य लेखन की प्रेरणा लेखक को संभवत: दिवंगत व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई से मिली होगी। लेकिन श्रीकान्त व्यास का व्यंग्य लेखन सर्वथा मौलिक और अनूठा है। लेखक ने पुस्तक की भूमिका में एक जगह लिखा है-"व्यंग्य सीमा में रहना पसंद नहीं करता। यह सीमा का अतिक्रमण करता है। जहाँ सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक आदि पाखंड, विसंगतियाँ, विद्रूपताएँ और विरोधाभास मौजूद हो, वहाँ व्यंग्य पल्लवित, पुष्पित और फलित होता है। उपर्युक्त परिस्थितियाँ व्यंग्य के अनुकूल मानी जाती है। मेरे तीखे व्यंग्य पढ़कर कई लोग मुझे अति व्यंग्यवादी भी कहते हैं। हालांकि मैं अपने व्यंग्य में समाज के कडुवा सच को उद्घाटित करता हूँ।"

श्रीकान्त व्यास की इस पुस्तक पर चन्द्र प्रकाश माया ने लिखा है-"ये अपने पूर्व के व्यंग्यकारों की लीक पर नहीं चलकर, अपनी लीक अलग बनाते दिखते हैं। इसलिए आज के व्यंग्यकारों में ये अग्रगण्य माने जाते हैं। व्यंग्य-विधा पर लिखने वालों की घोर कमी महसूस होती है, क्योंकि व्यंग्य-विधा पर चलना तलवार की धारा पर चलने के समान है और व्यास जी इसपर चलने को अभ्यस्त हो चुके दिखते हैं। गौर करें तो व्यास जी मनस्वी लेखक हैं, ये सिर्फ शब्दों से खेलते नहीं, बल्कि शब्दों को जीवंत और मुखर बनाते हैं। यही कारण है कि इनके व्यंग्य कथात्मकता के पंख पर उड़ते हैं। व्यंग्य विधा पर इनका ऐसा अधिकार हो गया है कि चुटकी बनाते अपनी बात अपने अंदाज में कह जाते हैं।"

"लक्खू दा की बताशा संस्कृति" में श्रीकान्त व्यास की मजेदार सतरह व्यंग्य कथाएँ हैं। "लक्खू दा की बताशा संस्कृति" की पहली व्यंग्य कथा "जनकवि चमोकानंद" है। यहाँ स्वधोषित तथाकथित जनकवि पर तीखे व्यंग्य-वाण चलाये हैं श्रीकान्त व्यास ने। ये जनकवि वैश्विक दृष्टि वाले हैं जिन्हें बगल पड़ोस में कुछ हो रहा है, पत्नी देखने को कहती है तो वह बड़बड़ाता है-"अरी, तुम्हें पता नहीं कि मेरी दृष्टि वैश्विक है। मेरा दिमाग हर हमेशा विश्व भ्रमण पर रहता है, न कि अपने मोहल्ले पर।"

दूसरी व्यंग्य कथा "भारतीय रसभोग समारोह" सरकारी खर्चे पर गुलछर्रे उड़ानेवाले कतिपय साहित्यसेवियों, संस्कृति के उन्नायकों का बखिया उधेड़ा है-श्रीकान्त व्यास ने। स्वप्नलोक में मुख्यमंत्री बनकर 'चूजाचूज' और 'तितलियाँ' पर अपनी अज्ञानता का स्वांग करते हैं फिर चमचे व धूर्त बेचन राय को सचेत करते हैं कि अपनी कारगुजारी से बाज आयें, साहित्य व संस्कृति को रीतिकाल में न ले जायें, पाठक को रंगमंचीय आनन्द प्रदान करता है। शब्दों के सहारे कथानक की पृष्ठभूमि को उकेरने में लेखक

को आशातीत सफलता मिली है।

संग्रह की एक महत्वपूर्ण व्यंग्य कथा है-लक्ख दा की बताशा संस्कृति। इसका नायक बड़े व्यापारिक घराने का युवा है। इनकी आर्थिक स्थिति दादा के समय शान-ए-सौकत के विपरीत काफी दयनीय है लेकिन दवंगई की बदौलत राजनीति में एक खास मुकाम हासिल कर लिया है। इनके माध्यम से लेखक ने जनतंत्र के यथार्थ को दिखाया है। जनता 'बताशे' पर संतोष करे तथा नेता छप्पन भोगों का स्वाद ले-दबंग नेता का फलसफा (दर्शन) है।

फतासी अंदाज में लिखी संग्रह की व्यंग्य कथा "स्वर्गीय फणीश्वरनाथ रेणु जी" में लेखक ने यमलोक के न्याय प्रणाली पर सवाल किया है। इसमें माउण्टेन मैन दशरथ मांझी की भी चर्चा है। इस कथा में लेखक ने स्वर्ग और नरक को प्रतीक बनाकर भ्रष्टाचार, शोषण और दमन के सार्वलौकिक यथार्थ को दर्शाया है।

एक ईमानदार आदमी को राजनीति के क्षेत्र में किस तरह दरकिनार किया जाता है इसकी बानगी देखनी हो तो "कालेश्वर काका के अरमान" में बखूबी देख सकते हैं। इस व्यंग्य कथा में लेखक ने पिछली शताब्दी के अस्सी के दशक बाद राजनीतिक नजरिये के बदलाव को दिखाया है। कालेश्वर काका जैसे सच्चे समाजसेवी राजनीतिक दलों की नजर में चुनाव जीताऊ उम्मीदवार नहीं हो सकते। इसी विद्रूप स्थिति से पाठकों को रू-ब-रू कराया गया है। राजनीति में पैसों का आज बोलवाला है।

"मुझे कुंवारे ही रहने दो" व्यंग्य कथा में एक कुंवारे का तार्किक वकालत है। इस कथा के माध्यम से लेखक ने कुंवारेपन के कारणों का जिक्र किया है, इनकी परेशानियों और आसानियों की लम्बी सूची पेश किया है। मनोरंजनात्मक अंदाज की यह कृति सराहनीय है। यह शानदार व्यंग्य कथा है।

"शेर सिंह शहीद हुए" व्यंग्य कथा में मारक प्रहार है। लेखक ने यहाँ एक कॉमरेड के 'क्रांति' के स्वांग को बेहतरीन तरीके से उकेरा है। पूँजीवाद-सम्राज्यवाद के तथाकथित विरोधी व्यक्तित्व शेर सिंह का निधन कोका कोला ठंडा पेय पीने से हो गया। इसी को श्रीकान्त व्यास ने शहादत की संज्ञा देकर उसके पाखंड पर प्रबल प्रहार किया है।

संग्रह की एक मजेदार व्यंग्य कथा है-"जब अनिरूद्ध भैया ही नहीं रहे"। इस व्यंग्य कथा में व्यंग्यकार ने स्वर्ग-नरक -मोक्ष के अस्तित्व को नकारा है। व्यंग्यकथाकार के कहने का अभिप्राय है कि अंधआस्था किसी भी रूप में ठीक नहीं।

पुस्तक की एक रसपूर्ण व्यंग्य कथा है-"देख दरबारी कथा समारोह"। इसे व्यंग्य कथा में श्रीकान्त व्यंग्य ने मुख्यमंत्री के दरबार में आनेवाले साहित्यकारों का कच्चा चिट्ठा खोला है। धूर्त बेचनानंद, एड्सरोगानंद व गजगामिनी के साहित्यिक गड़बड़झाला को बड़ी बेबाकी से पाठकों के समक्ष परोसा गया है। साहित्यिक समारोह के नाम पर तिकड़म के खेल को उजागर किया गया है।

"साहित्य का वीरप्पनकाल" व्यंग्य कथा के जरिये श्रीकान्त व्यास ने पाठकों को साहित्य की दुनिया की काली करतूत से अवगत कराया है। व्यंग्यकार ने वीरप्पन साहित्य के वीरप्पन क्लीनसेव वीरप्पन की चर्चा की है। वीरप्पनकाल के छोटे-बड़े-मझौले वीरप्पन-सब के सब एक चाल-ढाल में एक जैसे दिखाई देते हैं। इस कथा में साहित्य को मुट्ठियों में रखने वाले दबंग कौकस मंडली के मकड़जाल को दिखाया है। श्रीकान्त व्यास की यह व्यंग्य कथा न केवल पाठकों का मनोरंजन करता है बल्कि नवोदित साहित्यकारों को ऐसी मकड़जाल के प्रति सचेत भी करता है।

"पोस्ट बॉक्स नम्बर सोलह" में रचनाकार ने पोस्ट बॉक्स नम्बर की उपयोगिता बतलाया है। यह भी बताया है कि ज्योतिष शास्त्र के अंक-गणना में उनका बिल्कुल विश्वास नहीं है लेकिन निरन्तर कई घटनाओं ने उसके मन में बैठा दिया है कि सोलह का अंक उसके लिए शुभ है। संभवत: अंधविश्वास अपने पाँव इसी प्रकार पसारती है।

आज भारत में एक नई प्रवृत्ति देखी जा रही है-जातिवादी अभिजात्य वर्ग द्वारा राष्ट्रवाद की रट

लगाना। व्यंग्यकार ने ऐसे वर्ग की मानसिकता पर व्यंग्य-वाण चलाया है-"राष्ट्रवादी का राष्ट्रवाद" व्यंग्य कथा में।

इस भौतिकवादी युग में ईमान का नहीं, बल्कि पैसे का बोलबाला है। आज के युग में ईमानदार होना गुण नहीं, बल्कि अवगुण माना जाता है। ''ईमानदार होना भी क्या बला है!'' जैसी व्यंग्य कथा में लेखक ने अपने साहित्यिक सहयोगी की ईमानदारी पर खीज दिखाकार उनके आदर्श की प्रतिस्थापना की है।

संग्रह की एक व्यंग्य रचना है-"मन की नहीं, दिल की सुनो" में लेखक ने 'मन' और 'दिल' को अलग-अलग परिभाषित किया तथा द्वन्द्व की स्थिति में दिल को तरजीह देने की सलाह दी है। दिल और मन में दिल को सर्वोपरी माना है लेखक ने।

व्यंग्य कथा "सम्पादक बनाम ब्रेन हेमरेज" में लेखक ने पाठक को अखबारी दुनिया के सच से रू,-ब-रू कराया है। व्यंग्य कथा की एक बानगी देखिये-"मगर रिपोर्टर बने रहने के भी कई फायदे हैं, जो सम्पादक की कुर्सी पर चढ़-उतर कर नहीं हो सकता! पहला फायदा यह है कि कोई भी जीवट वाला रिपोर्टर अपने जीवनकाल में आत्महत्या नहीं करेगा। क्योंकि आत्महत्या के लिए जो परिस्थितियाँ पैदा होती हैं, बेचारे पत्रकारिता करने के दरम्यान दर्जनों बार झेल चुके होते हैं। जिसमें आत्महत्या की परिस्थिति से मुकाबला करने की कुव्वत नहीं, उसे किसी भी अखबार में रिपोर्टर बनने का कोई अधिकार नहीं। दूसरा फायदा यह है कि उसे बुढ़ापा में खटिया, चौकी अथवा पलंग पर झूलने की नौबत नहीं आती। क्योंकि अमूमन रिपोर्टर अपना अमृत महोत्सव यानि पचहत्तरवाँ जन्मदिन भी नहीं मना पाता। कितने तो जवानी में ही रोगग्रस्त होकर दुनिया से कूच कर जाते हैं।"

"स्वर्ग में मौज" तथा "मानने या न मानने की परम्परा" भी अपने आप में बेजोड़ व्यंग्य कथाएँ हैं। ऐसी उत्कृष्ट और शानदार कृति के लिए व्यंग्य कथाकार साधुवाद के पात्र हैं। आज राष्ट्रीय फलक पर श्रीकान्त व्यास अपनी व्यंग्य शैली के लिए विख्यात है। सन् 2015 के नवम्बर माह में समीक्ष्य पुस्तक व्यास प्रकाशन, पटना (बिहार) से प्रकाशित हुई है।

पुस्तकः लक्खू दा की बताशा संस्कृति

(हिन्दी व्यंग्य कथा-संग्रह)

लेखकः श्रीकान्त व्यास

प्रकाशकः व्यास प्रकाशन, नीलाचल निवास, दक्षिणी मंदिरी, पटना-800001, बिहार

प्रकाशन वर्षः नवम्बर 2015 (प्रथम संस्करण)

पृष्ठः 96 (छियानवें) **मूल्यः** 125 रुपये

❖❖❖